International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-2, March-April – 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

वैश्विक विकास और राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०

प्रीती आर्या
शोध क्षात्रा ऐम बी पी जी महाविद्यालय
हल्दवानी उत्तराखण्ड

सार

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है सीखने एवं सिखाने की क्रिया परंतु अगर इसके व्यापक अर्थ को देखें तो शिक्षा किसी भी समाज में निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है जिसका कोई उद्देश्य होता है और जिससे मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास तथा व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा द्वारा ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाया जाता है।गौरतलब है कि नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इस नीति द्वारा देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है। इसके उद्देश्यों के तहत वर्ष 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100: GER के साथ–साथ पूर्व–विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०, विकास

परिचय

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक समान और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मौलिक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना है आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के मामले में भारत की निरंतर चढ़ाई और वैश्विक मंच पर नेतृत्व की कुंजी। व्यक्ति, समाज, देश और देश की भलाई के लिए हमारे देश की समृद्ध प्रतिभाओं और संसाधनों को विकसित करने और अधिकतम करने के लिए सार्वभौमिक उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सबसे अच्छा तरीका है। दुनिया। अगले दशक में भारत में दुनिया में युवाओं की सबसे अधिक आबादी होगी, और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक अवसर प्रदान करने की हमारी क्षमता हमारे भविष्य का निर्धारण करेगी। 2015 में भारत द्वारा अपनाए गए सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के लक्ष्य 4 (एसडीजी 4) में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा – ष्समावेशी और समान गुणवत्ता सुनिश्चित करनाष चाहता है। शिक्षा और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना" 2030 तक। इस तरह के एक ऊंचे लक्ष्य के लिए संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को समर्थन और सीखने को बढ़ावा देने के लिए पुनरू कॉन्फ़िगर करने की आवश्यकता होगी, ताकि सभी महत्वपूर्ण सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के लक्ष्यों और लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त किया जा सकता है। दुनिया ज्ञान परिदृश्य में तेजी से बदलाव के दौर से गुजर रही है। विभिन्न नाटकीय वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ, जैसे कि बड़े डेटा का उदय, मशीन लर्निंग, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, दुनिया भर में कई अकुशल नौकरियों को मशीनों द्वारा लिया जा सकता है, जबकि एक कुशल कार्यबल की आवश्यकता है, विशेष रूप से गणित, कंप्यूटर विज्ञान और डेटा विज्ञान को मिलाकर। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु–विषयक क्षमताओं के साथ, अधिक से अधिक मांग में वृद्धि होगी। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते प्राकृतिक संसाधनों के साथ, हम दुनिया की ऊर्जा, पानी, भोजन और स्वच्छता

की जरूरतों को पूरा करने के तरीके में एक बड़ा बदलाव करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप फिर से नए कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होगी, विशेष रूप से जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान में, भौतिकी, कृषि, जलवायु विज्ञान और सामाजिक विज्ञान। महामारी और महामारियों के बढ़ते उद्भव के लिए संक्रामक रोग प्रबंधन और टीकों के विकास में सहयोगात्मक अनुसंधान की आवश्यकता होगी और परिणामी सामाजिक मुद्दे बहु–विषयक की आवश्यकता को बढ़ा देंगे। सीख रहा हूँ। मानविकी और कला की मांग बढ़ेगी, क्योंकि भारत एक विकसित देश बनने के साथ–साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

वास्तव में, तेजी से बदलते रोजगार परिदृश्य और वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र के साथ, यह तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है कि बच्चे न केवल सीखते हैं, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण रूप से सीखते हैं कि कैसे सीखना है। इस प्रकार, शिक्षा को कम सामग्री की ओर बढ़ना चाहिए, और यह सीखने की दिशा में अधिक होना चाहिए कि कैसे गंभीर रूप से सोचें और समस्याओं को हल करें, रचनात्मक और बहु–विषयक कैसे बनें, और नए को कैसे नया, अनुकूलित और अवशोषित करें। उपन्यास और बदलते क्षेत्रों में सामग्री। शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक, समग्र, एकीकृत, पूछताछ–संचालित, खोज–उन्मुख, शिक्षार्थी–केंद्रित, चर्चा–आधारित, लचीला और निश्चित रूप से मनोरंजक बनाने के लिए शिक्षाशास्त्र को विकसित करना चाहिए। शिक्षार्थियों के सभी पहलुओं और क्षमताओं को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम में बुनियादी कला, शिल्प, मानविकी, खेल, खेल और फिटनेस, भाषा, साहित्य, संस्कृति और मूल्य शामिल होने चाहिए। और शिक्षार्थी के लिए शिक्षा को अधिक पूर्ण, उपयोगी और संतोषजनक बनाना। शिक्षा को चरित्र का निर्माण करना चाहिए, शिक्षार्थियों को नैतिक, तर्कसंगत, दयालु और देखभाल करने में सक्षम बनाना चाहिए, साथ ही साथ उन्हें लाभकारी, पूर्ण रोजगार के लिए तैयार करना चाहिए। सीखने के परिणामों की वर्तमान स्थिति और जो आवश्यक है, के बीच की खाई को प्रमुख सुधारों के माध्यम से पाटना चाहिए, जो सिस्टम में उच्चतम गुणवत्ता, इक्विटी और अखंडता लाते हैं। उच्च शिक्षा के माध्यम से बचपन की देखभाल और शिक्षा। भारत के लिए 2040 तक एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होना चाहिए जो किसी से पीछे न हो, सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी शिक्षार्थियों के लिए उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुंच हो। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है और इसका उद्देश्य हमारे देश की कई बढ़ती विकासात्मक अनिवार्यताओं को संबोधित करना है। यह नीति प्रस्तावित करती हैरू भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों पर निर्माण करते हुए, एसडीजी 4 सहित 21 वीं सदी की शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ एक नई प्रणाली बनाने के लिए, इसके विनियमन और शासन सहित शिक्षा संरचना के सभी पहलुओं का संशोधन और सुधार। राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के विकास पर विशेष जोर देती है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा को न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करना चाहिए – साक्षरता और संख्यात्मकता की श्आधारभूत क्षमताश और श्उच्च–क्रमश संज्ञानात्मक क्षमताएं, जैसे कि महत्वपूर्ण सोच और समस्या समाधान – बल्कि सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक भी। क्षमता और स्वभाव।

प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध विरासत इस नीति के लिए मार्गदर्शक रही है। ज्ञान (ज्ञान), ज्ञान (प्रज्ञा), और सत्य (सत्य) की खोज हमेशा थी भारतीय विचार और दर्शन में सर्वोच्च मानव लक्ष्य के रूप में माना जाता है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल इस संसार या जीवन में जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान प्राप्त करना नहीं था स्कूली शिक्षा से परे, लेकिन स्वयं की पूर्ण प्राप्ति और मुक्ति के लिए। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व स्तरीय संस्थानों ने बहु–विषयक शिक्षण और अनुसंधान के उच्चतम मानकों को स्थापित किया और पृष्ठभूमि और देशों के विद्वानों और छात्रों की मेजबानी की। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्त, माधव, पाणिनी, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला,

शंकरदेव, मैत्रेयी, गार्गी और तिरुवल्लुवर जैसे महान विद्वानों का उत्पादन किया। कई अन्य लोगों के बीच, जिन्होंने गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सर्जरी, सिविल इंजीनियरिंग, वास्तुकला, जहाज निर्माण और नेविगेशन, योग, ललित कला, शतरंज, और अधिक जैसे विविध क्षेत्रों में विश्व ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय संस्कृति और दर्शन का विश्व पर गहरा प्रभाव रहा है। विश्व विरासत के लिए इन समृद्ध विरासतों को न केवल पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शोध, बढ़ाया और नए उपयोगों में भी रखा जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दे दी है जिससे स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रूपांतरकारी सुधार के रास्ते खुल गए हैं। यह 21 वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है और यह 34 साल पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई), 1986 की जगह लेगी। सबके लिए आसान पहुंच, इक्विटी, गुणवत्ता, वहनीयता और जवाबदेही के आधारभूत स्तंभों पर निर्मित यह नई शिक्षा नीति सतत विकास के लिए एजेंडा 2030 के अनुकूल है और इसका उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों के अनुकूल स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना और प्रत्येक छात्र में निहित अद्विती राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्त्वपूर्ण बातें

स्कूली शिक्षा

स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सबकी एकसमान पहुंच सुनिश्चित करना

एनईपी 2020 स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों प्री–स्कूल से माध्यमिक स्तर तक सबके लिए एकसमान पहुंच सुनिश्चित करने पर जोर देती है। स्कूल छोड़ चुके बच्चों को फिर से मुख्य धारा में शामिल करने के लिए स्कूल के बुनियादी ढांचे का विकास औरर नवीन शिक्षा केंद्रों की स्थापनी की जाएगी। इस नई शिक्षा नीति में छात्रों और उनके सीखने के स्तर पर नज़र रखने, औपचारिक और गैर–औपचारिक शिक्षा सहित बच्चों की पढ़ाई के लिए बहुस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराने, परामर्शदाताओं या प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं को स्कूल के साथ जोड़ने, कक्षा 3,5 और 8 के लिए एनआईओएस और राज्य ओपन स्कूलों के माध्यम से ओपन लर्निंग, कक्षा 10 और 12 के समकक्ष माध्यमिक शिक्षा कार्यक्रम, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, वयस्क साक्षरता और जीवन–संवर्धन कार्यक्रम जैसे कुछ प्रस्तावित उपाय हैं। एनईपी 2020 के तहत स्कूल से दूर रह रहे लगभग 2 करोड़ बच्चों को मुख्य धारा में वापस लाया जाएगा। नए पाठ्यक्रम और शैक्षणिक संरचना के साथ प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा बचपन की देखभाल और शिक्षा पर जोर देते स्कूल पाठ्यक्रम के 10 + 2 ढांचे की जगह 5 + 3 + 3 + 4 का नया पाठयक्रम संरचना लागू किया जाएगा जो क्रमशः 3–8, 8–11, 11–14, और 14–18 उम्र के बच्चों के लिए है। इसमें अब तक दूर रखे गए 3–6 साल के बच्चों को स्कूली पाठ्यक्रम के तहत लाने का प्रावधान है, जिसे विश्व स्तर पर बच्चे के मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण चरण के रूप में मान्यता दी गई है। नई प्रणाली में तीन साल की आंगनवाड़ी / प्री स्कूलिंग के साथ 12 साल की स्कूली शिक्षा होगी।

एनसीईआरटी 8 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (एनसीपीएफईसीसीई) के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचा विकसित करेगा। एक विस्तृत

और मजबूत संस्थान प्रणाली के माध्यम से प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) मुहैया कराई जाएगी। इसमें आंगनवाडी और प्री–स्कूल भी शामिल होंगे जिसमें इसीसीई शिक्षाशास्त्र और पाठ्यक्रम में प्रशिक्षित शिक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता होंगे। इसीसीई की योजना और कार्यान्वयन मानव संसाधन विकास, महिला और बाल विकास (डब्ल्यूसीडी), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण (एचएफडब्ल्यू), और जनजातीय मामलों के मंत्रालयों द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त करना

बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की प्राप्ति को सही ढंग से सीखने के लिए अत्यंकत जरूरी एवं पहली आवश्यकता मानते हुए 'एनईपी 2020* में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) द्वारा 'बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन' की स्थापना किए जाने पर विशेष जोर दिया गया है। राज्यर वर्ष 2025 तक सभी प्राथमिक स्कूलों में ग्रेड 3 तक सभी शिक्षार्थियों या विद्यार्थियों द्वारा सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्राप्त कर लेने के लिए एक कार्यान्वयन योजना तैयार करेंगे। एक राष्ट्रीय पुस्तक संवर्धन नीति तैयार की जानी है।

स्कूल के पाठ्यक्रम और अध्यापन–कला में सुधार

स्कूल के पाठ्यक्रम और अध्यापन–कला का लक्ष्यत यह होगा कि 21वीं सदी के प्रमुख कौशल या व्यादवहारिक जानकारियों से विद्यार्थियों को लैस करके उनका समग्र विकास किया जाए और आवश्यक ज्ञान प्राप्ति एवं अपरिहार्य चिंतन को बढ़ाने व अनुभवात्मक शिक्षण पर अधिक फोकस करने के लिए पाठ्यक्रम को कम किया जाए। विद्यार्थियों को पसंदीदा विषय चुनने के लिए कई विकल्पि दिए जाएंगे। कला एवं विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम व पाठ्येतर गतिविधियों के बीच और व्यावसायिक एवं शैक्षणिक विषयों के बीच सख्त् रूप में कोई भिन्नहता नहीं होगी

स्कूलों में छठे ग्रेड से ही व्यावसायिक शिक्षा शुरू हो जाएगी और इसमें इंटर्नशिप शामिल होगी।

एक नई एवं व्यापक स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा 'एनसीएफएसई 2020–21* एनसीईआरटी द्वारा विकसित की जाएगी।

बहुभाषावाद और भाषा की ताकत

नीति में कम से कम ग्रेड 5 तक, अच्छाठ हो कि ग्रेड 8 तक और उससे आगे भी मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा को ही शिक्षा का माध्यम रखने पर विशेष जोर दिया गया है। विद्यार्थियों को स्कूल के सभी स्तरों और उच्च शिक्षा में संस्कृत को एक विकल्प के रूप में चुनने का अवसर दिया जाएगा। त्रि–भाषा फॉर्मूले में भी यह विकल्पि शामिल होगा। किसी भी विद्यार्थी पर कोई भी भाषा नहीं थोपी जाएगी। भारत की अन्य पारंपरिक भाषाएं और साहित्य भी विकल्प के रूप में उपलब्ध होंगे। विद्यार्थियों को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल के तहत 6–8 ग्रेड के दौरान किसी समय 'भारत की भाषाओं' पर एक आनंददायक परियोजना/गतिविधि में भाग लेना होगा। कई विदेशी भाषाओं को भी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर एक विकल्प् के रूप में चुना जा सकेगा। भारतीय संकेत भाषा यानी साइन लैंग्वेज (आईएसएल) को

देश भर में मानकीकृत किया जाएगा और बधिर विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्त रीय पाठ्यक्रम सामग्री विकसित की जाएंगी।

आकलन में सुधार

'एनईपी 2020* में योगात्मक आकलन के बजाय नियमित एवं रचनात्मिक आकलन को अपनाने की परिकल्पना की गई है, जो अपेक्षाकृत अधिक योग्यता–आधारित है, सीखने के साथ–साथ अपना विकास करने को बढ़ावा देता है, और उच्चस्तकरीय कौशल जैसे कि विश्लेषण क्षमता, आवश्य क चिंतन–मनन करने की क्षमता और वैचारिक स्पष्टता का आकलन करता है। सभी विद्यार्थी ग्रेड 3, 5 और 8 में स्कूली परीक्षाएं देंगे, जो उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा संचालित की जाएंगी। ग्रेड 10 एवं 12 के लिए बोर्ड परीक्षाएं जारी रखी जाएंगी, लेकिन समग्र विकास करने के लक्ष्यच को ध्यातन में रखते हुए इन्हें नया स्वरूप दिया जाएगा। एक नया राष्ट्रीय आकलन केंद्र 'परख (समग्र विकास के लिए कार्य–प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण) एक मानक–निर्धारक निकाय के रूप में स्थापित किया जाएगा।

समान और समावेशी शिक्षा

'एनईपी 2020* का लक्ष्यआ यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बच्चा अपने जन्म या पृष्ठभूमि से जुड़ी परिस्थितियों के कारण ज्ञान प्राप्ति या सीखने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के किसी भी अवसर से वंचित नहीं रह जाए। इसके तहत विशेष जोर सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से वंचित समूहों (एसईडीजी) पर रहेगा जिनमें बालक–बालिका, सामाजिक–सांस्कृतिक और भौगोलिक संबंधी विशिष्ट(पहचान एवं दिव्यांरगता शामिल हैं। इसमें बुनियादी सुविधाओं से वंचित क्षेत्रों एवं समूहों के लिए बालक–बालिका समावेशी कोष और विशेष शिक्षा जोन की स्थापना करना भी शामिल है। दिव्यांग बच्चों को बुनियादी चरण से लेकर उच्च शिक्षा तक की नियमित स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने में सक्षम बनाया जाएगा जिसमें शिक्षाविशारद का पूरा सहयोग मिलेगा और इसके साथ ही दिव्यांगता संबंधी समस्तक प्रशिक्षण, संसाधन केंद्र, आवास, सहायक उपकरण, प्रौद्योगिकी–आधारित उपयुक्त उपकरण और उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अन्य सहायक व्यवस्थाएं भी उपलब्धम कराई जाएंगी। प्रत्येक राज्य/जिले को कला–संबंधी, कैरियर–संबंधी और खेलकूद–संबंधी गतिविधियों में विद्यार्थियों के भाग लेने के लिए दिन के समय वाले एक विशेष बोर्डिंग स्कूल के रूप में 'बाल भवन' स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। स्कूल की निरूशुल्क बुनियादी ढांचागत सुविधाओं का उपयोग सामाजिक चेतना केंद्रों के रूप में किया जा सकता है।

प्रभावकारी शिक्षक भर्ती और करियर प्रगति मार्ग

शिक्षकों को प्रभावकारी एवं पारदर्शी प्रक्रियाओं के जरिए भर्ती किया जाएगा। पदोन्नति योग्यता आधारित होगी जिसमें कई स्रोतों से समय–समय पर कार्य–प्रदर्शन का आकलन करने और करियर में आगे बढ़कर शैक्षणिक प्रशासक या शिक्षाविशारद बनने की व्य वस्थां होगी। शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय प्रोफेशनल मानक (एनपीएसटी) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष 2022 तक विकसित किया जाएगा, जिसके लिए

एनसीईआरटी, एससीईआरटी, शिक्षकों और सभी स्तरों एवं क्षेत्रों के विशेषज्ञ संगठनों के साथ परामर्श किया जाएगा।

उपसंहार

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक समान और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मौलिक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना है आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के मामले में भारत की निरंतर चढ़ाई और वैश्विक मंच पर नेतृत्व की कुंजी। व्यक्ति, समाज, देश और देश की भलाई के लिए हमारे देश की समृद्ध प्रतिभाओं और संसाधनों को विकसित करने और अधिकतम करने के लिए सार्वभौमिक उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सबसे अच्छा तरीका है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दे दी है जिससे स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रूपांतरकारी सुधार के रास्ते खुल गए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आइजेंक,एच0जे0 एवं अन्य (सं०): इनसाइक्लोपीडिया ऑफ साइकोलॉजी(वायलूम–1), सर्वप्रेस, लंदन, 1972, पेज 96–97।
2. आइजेंक, एच0जे0एण्ड अदर्स (संव)रू इनसाक्लोपीडिया ऑफ साइकोलॉजी (वायलूम–1), सर्चप्रेस, लंदन, 1972, पेज 95।
3. आलपोर्ट, सी0 एस0; अभिवृत्ति इन विशिबल (आई0 वी0) रीडिंग इन इनस्टीट्यूट थियरी एण्ड मेजरमेण्ट, न्यूयार्क विल्नी, 1967।
4. अग्रवाल, जे0सी0; मेजर रिकमेन्डेशन ऑफ द एजूकेशन कमीशन (1964–66), आर्या बुक डिपो, नई दिल्ली, 1966।
5. एडवर्ड, एजेजन एल0; एक्सपेरीमेन्टल डिजाइन इन साइकोलाजिकल रिसर्च, अभीरेन्ड पब्लिशिंग कम्पनी प्रा0 लि0 नई दिल्ली, 1971।
6. ब्रुनो, पैट्रीशिया जे0; "प्लानिंग इम्प्लेमेण्टिंग एण्ड इवैलुएटिंग ए वर्कशाप फॉर वोकेशनल एजूकेटर्स हू आर टीचिंग स्टूडेण्ट्स विथ हैण्डीकैपिंग कन्डीशन्सश डिजर्टेशन आबस्ट्रैक्ट्स इण्टरनेशलन; दिसम्बर, 1989, पेज 1642।
7. बुचर, मारलिस जोन; "द परसीव्ड टास्क्स परफार्मड बाई प्रिंसिपल वोकेशनल ऐडमिनिस्ट्रेटर्स इन पब्लिकली सपोर्टेड पोस्ट– सेकेण्ड्री इन्स्टीट्यूशन्स इन द यूनाइटेड स्टेट्सश डिजर्टेशन आबस्ट्रैक्ट्स इण्टरनेशनल; मार्च, 1992, पेज 3254।

8. बकलार्ज, बारबारा अन्न; ष्बैरियर्स टू इम्प्लेमेटिंग कम्पटेंसी– बेस्ड वोकेशनल एजूकेशन एज परसीव्ड बाई ऐडमिनिस्ट्रेटर्स एण्ड टीचर्सष डिजर्टेशन आबस्ट्रैक्ट्स इण्टरनेशनल; 1978–83, एन0सी0ई0आर0टी0, दिसम्बर, 1989, पेज 1641।

9. भार्गव, एम0; "ए स्टडी ऑफ एटीट्यूडनल एण्ड पर्सनालिटी कोरिलेट्स ऑफ पीपुल्स ऐक्सेप्टेन्स ऑफ फेमली प्लानिंग," पी–एच0डी0 साइकोलॉजी, आगरा यूनिवर्सिटी, 1979।प्प् सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एम0 बी0 बुच,1978–83,एन0सी0ई0आर0टी,0 पेज 112।

10. भार्गव,एम0; "ए स्टडी ऑफ एटीट्यूडनल एण्ड पर्सनालिटी कोरिलेट्स ऑफ पीपुल्स ऐक्सेप्टेन्स ऑफ फेमली प्लानिंग, पी–एच0डी0 साइकोलॉजी, आगरा यूनिवर्सिटी, 1979।प्प् सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एम0 बी0 बुच, 1978–83, एन0 सी0 ई0 आर0 टी, पेज 112।

11. बोरिंग,ई0 जी0 एवं अन्य (सं0) रू फाउण्डेशन्स ऑफ साइकोलॉजी, जानविली एण्ड सन्स, यू0एस0 ए0, 1653, पेज 565–66।

12. ब्रिट, एस0एच0 रू सोशल साइकोलॉजी ऑफ माडर्न लाइफ, राइनहार्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क, 1958, पेज 120।